भारतीय मानसून की उत्पत्ति के सिद्धांत
(Theories of Origin of Indian Monsoon)

भारत की जलवायु मानसूनी है। 'मानसून' शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के "मौसिम" शब्द से हुई है। मौसिम का अर्थ है - हवाओं की दिशा का मौसम के अनुसार पलट जाना अर्थात भारत में अरब सागर से तथा बंगाल की खाड़ी से चलने वाली हवाओं की दिशा में ऋतुवत परिवर्तन हो जाता है। 'मानसून' का सर्वप्रथम अध्ययन अरबी भूगोलवेत्ता अल मसूदी द्वारा किया गया था।

भारतीय मानसून की उत्पत्ति से संबंधित चार सिद्धांत प्रमुख है -

(i) तापीय सिद्धांत (Thermal concept)
(ii) विषुवतीय पछुआ पवन सिद्धांत (Equatorial westerlies)
(iii) जेट स्ट्रीम सिद्धांत (Jet stream theory)
(iv) अलनीनो सिद्धांत (El Nino theory)

(i) तापीय सिद्धांत — ब्रिटिश विद्वानों द्वारा यह सिद्धांत दिया गया था जिसमें डडले स्टॉम्प तथा केन्ड्रू महत्वपूर्ण है।

इस सिद्धांत के अनुसार मानसूनी हवाओं की उत्पत्ति का मुख्य कारण तापीय है। ग्रीष्मकाल में सूर्य की किरणें उत्तरी गोलार्द्ध में लंबवत पड़ती हैं। इससे यहाँ पर एक वृहत् निम्न दाब (Low Pressure) का क्षेत्र विकसित हो जाता है। इस निम्न दाब के कारण उत्तर पूर्वी व्यापारिक पवन (North East Trade wind) लुप्त हो जाता है।

तापीय विषुवत रेखा के उत्तर की ओर खिसकाव के कारण दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक पवन उत्तर की ओर विषुवत रेखा को पार कर आ जाता है तथा पुनः फेरेल नियम का अनुसरण करते हुए उत्तरी गोलार्द्ध में आने पर यह पवन अपनी दाहिने ओर अर्थात उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ जाता है तथा संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप पर प्रवाहित होने लगता है।

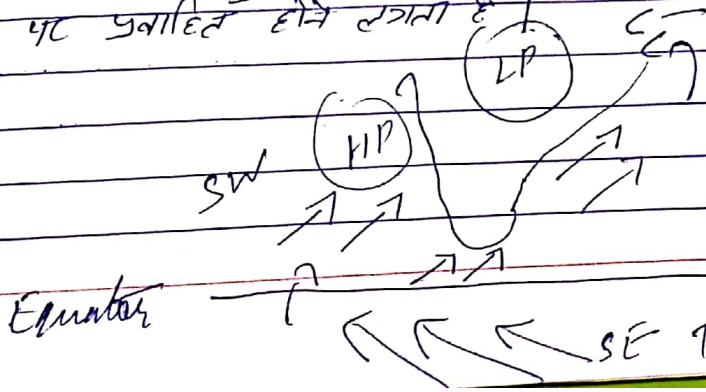

यह पवन चूंकि इतनी समुद्री दूरी तय कर आ रही होता है, अतः यह जलवाष्प युक्त होता है। यह भारतीय महाद्वीप में दो भागों में बंटकर वर्षा ऋतु लाता है। अरब सागर शाखा के द्वारा पश्चिमी घाट के पश्चिम ढाल पर तथा बंगाल की खाड़ी शाखा के द्वारा अंडमान व निकोबार द्वीप समूह एवं उत्तर पूर्वी भारत में भारी वर्षा होती है। बंगाल की खाड़ी शाखा उत्तर-पश्चिम भारत के निम्न वायु दाब वाले क्षेत्र की ओर बढ़ती है तथा पूर्व से पश्चिम की जलवाष्प की कमी के साथ ही वर्षा की मात्रा में भी कमी होती जाती है।

जाड़े की ऋतु में उत्तर-पूर्वी व्यापारिक पवनें पुनः चलने लगती हैं तथा यह उत्तर-पूर्वी मानसून बनकर आता है तथा बंगाल की खाड़ी से जलवाष्प ग्रहण कर तमिलनाडु के तट पर वर्षा करता है।

आलोचना – यह मानसून की अत्यंत सरल व्याख्या करता है, क्योंकि सूर्य का उत्तरायण एवं दक्षिणायण स्थिति हर साल निश्चित हैं, परंतु फिर भी मानसून इतनी अनिश्चित अनियमित क्यों रहती है? जबकि इसे निश्चित रहना चाहिए।

(ii) विषुवतीय पछुआ पवन सिद्धांत – यह सिद्धांत फ्लोन महोदय के द्वारा प्रतिपादित किया गया है। इनके अनुसार विषुवतीय पछुआ पवन ही दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी पवन है। इसकी उत्पत्ति अंतः उष्ण अभिसरण (ITCZ Inter Tropical Convergence Zone) के कारण होती है।

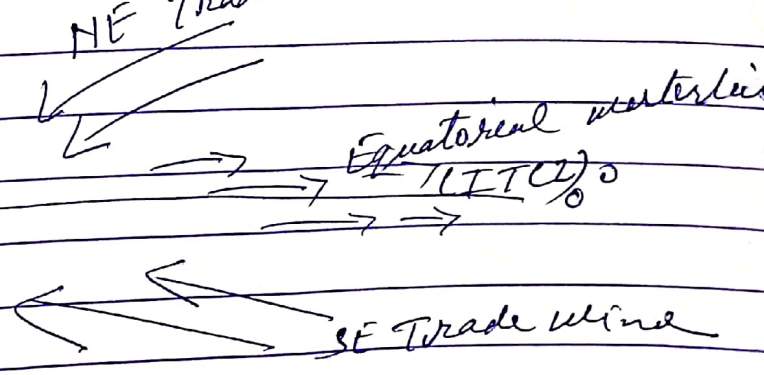

इन दोनों ही मानसून की उत्पत्ति हेतु तापीय प्रभाव को प्रमुख माना है। ग्रीष्म ऋतु में तापीय विषुवत रेखा के उत्तरी अक्षांश के कारण ITCZ विषुवत रेखा के उत्तर में होता है। विषुवतीय पछुवा पवन अपनी दिशा संशोधित कर भारतीय उपमहाद्वीप पर बने निम्न भार की ओर प्रवाहित होने लगता है। इसी से दक्षिण-पश्चिम मानसून का जन्म होता है।

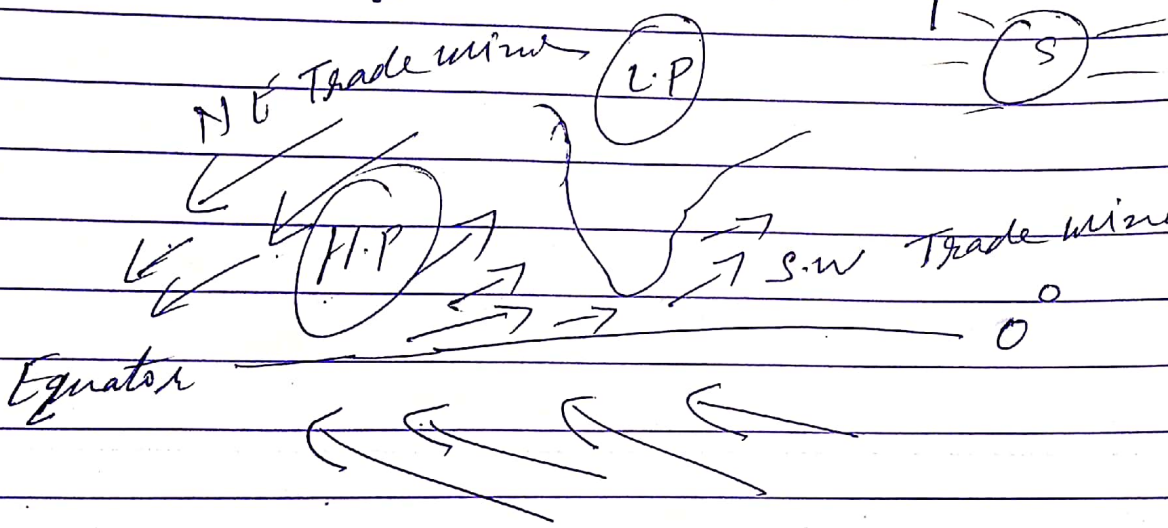

जाड़े की ऋतु में सूर्य के दक्षिणायण होने पर निम्न भार का क्षेत्र उच्च भार में बदल जाता है तथा उत्तर पूर्व व्यापारिक पवन पुनः गतिशील हो जाता है।

चूँकि यह सिद्धांत भी तापीय प्रभाव पर आधारित था। अतः इसकी आलोचना भी उसी आधार पर की गई जिस आधार पर तापीय सिद्धांत की।

Scanned with CamScanner